
खण्ड 3:

देहधारी होने के पश्चात उसकी मनुष्यता

हम कह चुके हैं कि यीशु परमेश्वर न होता तो हमारी रचना न होती, और यदि वह मनुष्य न बनता तो हमारा उद्धार नहीं हो सकता था।

हम यीशु की ईश्वरीयता पर काफ़ी देर से रह रहे हैं। उसकी ईश्वरीयता वैसी ही है जैसी होनी चाहिए थी। उसकी आवश्यकता बनी रहती है। उदाहरण के लिए, अमेरिका को ही लीजिए। हाल ही के एक सर्वेक्षण में प्रश्न था “क्या अमेरिकी लोगों के जीवन में धर्म का प्रभाव बढ़ रहा है या कम हो रहा है?” उत्तर देने वाले, 21 प्रतिशत लोगों ने कहा कि धर्म का प्रभाव बढ़ रहा है; जबकि 65 प्रतिशत ने कहा कि इसका प्रभाव कम हो रहा है। उस देश के एक प्रसिद्ध सर्वेक्षणकर्ता जॉर्ज गैलप जूनियर ने कहा है कि अमेरिका “बाइबल के अनपढ़ों का देश है। चॉकाने वाला तथ्य यह है कि अधिकतर अमेरिकियों को पता ही नहीं है कि वे क्या विश्वास करते हैं और क्यों करते हैं।” यदि “मसीही” होने का दावा करने वाले बहुत से लोगों का यह हाल है, तो उन लाखों करोड़ों के विषय में क्या कहा जा सकता है जो किसी भी प्रकार से मसीही होने का दावा नहीं करते हैं? हां, लोगों को समझाने के लिए शोध पत्र देने की आवश्यकता है कि यीशु वास्तव में परमेश्वर पुत्र है।

परन्तु, हमें यह समझाने की आवश्यकता भी लगती है कि यीशु नासरी हमारी तरह ही एक मनुष्य था। क्षमा करने वाले उस उद्धारकर्ता के बारे में समझने का क्या ढंग है जिसने सचमुच कष्ट सहे और परीक्षा में स्थिर रहा?

इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों के समान बने; जिससे वह उन बातों में जो परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं, एक दयालु और विश्वासयोग्य महायाजक बने ताकि लोगों के पापों के लिए प्रायश्चित्त करे। क्योंकि जब उसने परीक्षा की दशा में दुख उठाया, तो वह उनकी भी सहायता कर सकता है, जिसकी परीक्षा होती है (इब्रानियों 2:17, 18)।

कुछ लोग सिखाते हैं कि यीशु केवल आत्मा था अर्थात् परमेश्वर देह और आत्मा दोनों में नहीं रह सकता है। इसके विपरीत यीशु तो देह था। उसे भूख लगती थी (मत्ती 4:2); उसे प्यास लगती थी (यूहन्ना 19:28); वह थकता था (यूहन्ना 4:6); उसके शरीर से आंसू (यूहन्ना 11:35), पसीना (लूका 22:44) और लहू (यूहन्ना 19:34) बहता था।

यीशु के साथ रहने वाले लोग जानते थे कि वह एक असाधारण मनुष्य है, परन्तु उन्हें इस बात में कोई संदेह नहीं था कि वह मनुष्य है।